अंधेरे से उजाले की ओर

क्या आप जानते हैं कि मुम्बई में पहला नाइट स्कूल 1855 में (ज्योतिबा फुले द्वारा) खोला गया था ? आपको पता है कि आज राजधानी में तकरीबन 150 से अधिक नाइट स्कूल हैं और हर स्कूल में औसतन 70-80 बच्चे उन स्थितियों में पढ़ते हैं जिनकी हम और आप कल्पना भी नहीं कर सकते। चूंकि यहां पढ़ाई होती है, इसलिए इन जगहों को स्कूल ही कहा जाएगा, लेकिन सच यह है कि इनफ्रास्ट्रक्चर शब्द यहां अब भी दूर की कौड़ी है और केवल तीन घंटे रोज की स्पीड से कोर्स निपटाते थके-हारे शिक्षक और दिन भर काम करने के बावजूद असीम जज्बे का परिचय देते छात्र खबरों में बस एक बार आते हैं। तभी जब एचएससी या एसएससी बोर्ड के परिणाम घोषित हों। *निकिता केतकर* ने इन स्कूलों की दुखती नब्ज पर न केवल हाथ रखा बल्कि 'मासूम' के जरिए दो नाइट स्कूलों को गोद लेकर जुट गई इनकी दशा सुधारने को

निकिता केतकर

सें ट्रली एयरकंडीशन्ड और एलीट इंटरनेशनल स्कूलों की सोफिस्टिकेटेड जमात के बीच नाइट स्कूल की टूटी-फूटी इमारत में रात को पढ़ाई करते मेहनती लड़के-लड़कियों की कतार मुम्बई के बीच एक और मुम्बई की तस्वीर को उकेरने लगती है। जिंदगी के तूफानों के बीच संघर्ष का एक और दीया जलाकर यहां पढ़ने वालों का जज्बा गजब का है। उनके दीये की लौ को कुछ और रोशन करने का काम कर रही हैं निकिता केतकर।

कैसे जुड़ीं इस मुहिम से ? सवाल के जवाब में निकिता कहती हैं, 'नाइट स्कूल के टॉपर्स की दिल छूती कहानियां हमेशा मुझे खींचती थीं। जब मैं पहली बार नाइट स्कूल के बच्चों से मिली, तो मैंने जाना कि उनके गजब की प्रतिभा है लेकिन उनकी सामाजिक-पारिवारिक और आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं कि वे बहुत आगे जा सकें। पुकार के लिए 2006 में मैंने नाइट स्कूलों के छात्रों की समस्याओं पर एक रिसर्च की तो पता चला कि अधिकतर छात्र दिन भर छोटा-मोटा काम करके शाम को थके हारे खाली पेट क्लास में आते हैं। डे स्कूल जहां 6-7 घंटे चलते हैं वहीं नाइट स्कूलों को वही कोर्स तीन घंटे रोजाना पढ़ाकर खत्म करना होता है। बच्चों के पास किताबों-कापियों की कमी है। लैब, लाइब्रेरी, कंप्यूटर सपने सरीखे हैं। इन सबके बीच भी वे इतना अच्छा परफॉर्म कर लेते हैं (औसत एसएससी रिजल्ट 30 फीसदी) तो कुछ सुविधाएं मिले तो क्या होगा! बस 'मासूम' की नींव पड़ गई।'

सफर

मुम्बई यूनिवर्सिटी की पोलिटिकल साइंस पोस्ट ग्रेजुएट निकिता ने इंडियन सिविल सर्विसेज क्वालिफाई करने से पहले बतौर जर्नलिस्ट, लेक्चरर और सोशल वर्कर कई संस्थानों में काम किया है। तीन सालों तक डीआरडीओ, एयर हेडक्वार्टर्स, एनसीसी डायरेक्टरेट में काम करने के बाद भी मन समाज के लिए कुछ करने को बेचैन रहा तो 'सेव द चिल्ड्रन' और 'पुकार' से जुड़ गईं और फिर नाइट स्कूलों की बेहतरी के लिए एनजीओ 'मासूम' का गठन किया।

'मासूम' के जरिए निकिता और उनकी टीम पिछले दो सालों से वरली के मराठा मंदिर नाइट स्कूल और परेल के मिलिंद नाइट स्कूल के छात्रों को ये सुविधाएं मुहैया कराने में लगी है। दिलचस्प-उनकी टीम के तकरीबन सभी सदस्य नाइट स्कूलों के ही प्रोडक्ट हैं। 'इस तरह वे समस्याओं और छात्रों दोनों को बेहतर समझ सकते हैं।' कहती हैं निकिता। इस काम में उनकी मदद को आ जुटे हैं सुजाय जैसे संगठन और स्पांसर के रुप में मासूम का दामन थामा है ग्लोबल फंड फॉर चिल्ड्रन, एडेलगिव फाउंडेशन और अनलिमिटेड इंडिया जैसे संगठनों ने।

ऑन टॉप

किताबों-कॉपियों और साइंस की पोर्टेबल लैब के अलावा अंग्रेजी की क्लासें भी लगती हैं और कंप्यूटर की भी। न्यूट्रिशन की टिप्स के साथ और नशे की लत छुड़ाने की बात भी होती है तो अब तक उदासीन रहे पेरेंट्स और टीचर्स के लिए खास वर्कशॉप भी आयोजित होते हैं ताकि उनमें कम्यूनिकेशन बढ़े।

इन स्कूलों के लिए खास पॉलिसी बनाए जाने के प्रयास में लगीं निकिता का कहना है, 'राज्य में 200 से अधिक नाइट स्कूलों में 20 हजार बच्चे (15 से 25 वर्ष के) पढ़ाई कर रहे हैं फिर भी इनके लिए न तो कोई मानक तय हैं न ही शिक्षा विभाग में इसके लिए कोई प्रावधान है। छात्र पढ़ रहे हैं लेकिन उनकी दशा भी सुधरे इसके लिए राज्य सरकार को चौतरफा प्रयास करना होगा।'

इस साल परेल और वर्ली के चार और स्कूलों को गोद लेने जा रहे 'मासूम' और निकिता का सपना 2020 तक राज्य के सभी नाइट स्कूलों को गोद लेने का है।

आमीन!

कंचन श्रीवास्तव